पश्चिमी राजस्थान में कुटीर उद्योग–एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

*सुनिल कुमार

शोध सारांश

पश्चिमी राजस्थान औद्योगिक वातावरण बनाने, स्थानीय संसाधनों के अधिकतम उपयोग करने, उत्पादकता में सुधार, बुनियादी ढ़ाचे को विकसित करने के लिए कुटीर उद्योग के कई केन्द्रो की स्थापना की गई है। पश्चिमी राजस्थान में वित्तीय साधनों की कमी, कच्चे माल की कमी, सीमित बाजार उत्पादित वस्तुओं की गुणवत्ता, ऊर्जा की कमी, अवशिष्ट पदार्थो के उपयोग की सीमित संभावना, अनुसंधान और आधुनिक प्रौद्योगिकी की जानकारी का अभाव आदि कुटीर उ़द्योग की प्रमुख समस्याएँ है।

यहां राज्य सरकार रियायती दरों पर ऋण तकनीकी सहायता व विपणन की सुविधाएँ प्रदान करती है इन उद्योगों से पश्चिमी राजस्थान के कई लोगों को रोजगार प्राप्त होता है।

शोध आलेख

पश्चिमी राजस्थान में कुटीर उद्योग एक प्राचीन परम्परा रही है इन कुटीर उद्योगों पर भौगोलिक परिपेक्ष्य का पुरा प्रभाव रहा है जो यहां के स्थानीय लोगों की आजीविका को प्रभावित करता है। इन उद्योगों ने पश्चिमी राजस्थान की अर्थव्यवस्था को सुदुढ़ किया है यहां कुटीर उद्योग का विकास स्थानीय कच्चे माल के आधार पर हुआ यही कुटीर उद्योग यहां रोजगार के प्रयुक्त साधन रहे हैं पश्चिमी राजस्थान की विषम जलवायु के कारण वृहद उद्योगों विकास नगण्य रहा है अतः राज्य सरकार व केन्द्र सरकार ने यहां स्थानीय लोगों को रोजगार देने के लिए अधिक बल दिया। यहां भौतिक संसाधन की विभिन्नता के कारण भिन्न–भिन्न प्रकार के कुटीर उद्योग विकसित हुए कुछ कुटीर उद्योगों पर जाति विशेष का एकाधिकार रहा है।

यहां प्रमुख रूप से दरी बनाना, पत्थर की वस्तुए, ऊनी कपड़े, मिट्टी के खिलौने, लकड़ी के सामान, घाणी तेल, गुड़ खांडसारी, चमड़ा, कालीन कुटीर उद्योग पनपे है।

आधुनिक काल में सरकार द्वारा अनेक प्रकार के वॉकेशनल कॉर्स (व्यावसायिक पाठ्यक्रम) चलाये जा रहे है। जैसे– कताई, बुनाई, सिलाई, शॉफ्ट टोयज बनाना, तकनीकी प्रशिक्षण जैसे– कम्प्यूटर, मशीने चलने आदि का प्रशिक्षण। इस प्रकार के पाठ्यक्रम में किसी विषय के जानकर लोगों को प्रशिक्षण दिया जात है उन्हें प्रशिक्षण देने के लिये अनेक प्रशिक्षक लगाये जाते है। इस प्रकार के पाठ्यक्रमों के प्रति पश्चिमी राजस्थान भी जागरूक था, सरकार की इसी जागरूकता का परिणाम था– पश्चिमी राजस्थान में कुटीर उद्योग संस्थान/केन्द्र की स्थापना, जिसके माध्यम

से पश्चिमी राजस्थान में कुटीर उद्योगों को प्रोत्साहन दिया जा सके तथा प्रशिक्षण द्वारा कौशल विकास कर रोजगार भी प्रदान किया जा सके। जिससे बेरोजगारों को रोजगार मिल सके तथा बेरोजगारी को दूर किया जा सके।

पश्चिमी राजस्थान के लोगों को कुटीर उद्योगों का प्रशिक्षण देने हेतु इस प्रकार के कुटीर उद्योग केन्द्र चलाए जा रहे है ताकि बेरोजगारी को दूर किया जा सके तथा देश में उपभोग योग्य वस्तुओं के उत्पादन को बढ़ाया जा सके।

बाद में भारत सरकार द्वारा भी इस प्रकार के प्रशिक्षण केन्द्रों की स्थापना पर बल दिया गया। अनिवार्य सैनिक सेवा से मुक्त हुए लोगों को अपनी आजीविका चलाने हेतु सक्षम करना तथा उन्हें नागरिक जीवन में व्यवस्थित करने के लिये उन्हें इन केन्द्रों में भर्ती कर प्रशिक्षण देना आवश्यकता समझा गया। अतः अब पश्चिमी राजस्थान में भी इस प्रकार के केन्द्रों की स्थापना की जानी चाहिए।

कुटीर उद्योग में तात्पर्य है जिस उद्योग में 10 लाख से कम पूँजी लगी हो तथा 10 से 50 व्यक्ति कार्य करते हों। राजस्थान में प्राचीन काल से ही लघु एवं कुटीर उद्योगों का महत्त्व रहा है। इनसे जनता को न केवल रोजगार उपलब्ध होता था वरन् लोगों की आवश्यकता की पूर्ति भी यथास्थान हो जाती थी। अतः पश्चिमी राजस्थान के प्रत्येक गाँव में शिल्पकार, दस्तकार, बढ़ई, कारीगर सभी रहते थे। राज्य प्रमुख एवं लघु तथा कुटीर उद्योगों की तरफ से भी आज पिछड़ा हुआ है किन्तु सरकार इस पिछड़ेपन से छुटकारा पाने का भरसक प्रयास कर रही है। गाँवों के लोग ग्रामीण क्षेत्र में उद्योग होने से शहरों की ओर पलायन करने से रूक जाते हैं।

पश्चिमी राजस्थान में कुटीर उद्योग कृषि, खनिज, पशुधन, वन, रसायन इंजिनियरिंग आदि पर निर्भर है। कृषि पर आधारित उद्योगों में तेल धाणी उ़द्योग, गुड़ खांडसारी उद्योग, दाल बनाने का उद्योग, हाथ करघा उद्योग, गोटा उद्योग, खादी उद्योग, बंधाई उद्योग, छपाई–रंगाई उ़द्योग, दरी व निवार उद्योग आदि। पशुओं पर आधारित उद्योग चम्र उद्योग, हड्डी पीसना, हाथी दाँत, ऊनी वस्त्र उद्योग आदि। खनिज पदार्थों पर आधारित लघु एवं कुटीर उद्योग, संगमरमर उद्योग, ग्रेनाइट उद्योग, बलुई पत्थर के खिलौनों का उद्योग, पीतल, तांबे तथा स्टील के बर्तनों का उद्योग, सोने–चाँदी के आभूषण व बर्तन, लोहा उद्योग आदि। वनों पर आधारित उद्योग लकड़ी का कार्य, बांस उद्योग, कागज बनाना, बीड़ी उद्योग, कत्था, लाख तथा गोंद उद्योग, माचिस उद्योग, कागज की कुट्टी के खिलौने, हाथ दाँत के खिलौने, चंदन की लकड़ी के खिलौनों का उद्योग, इत्र उद्योग आदि।

कुटीर उद्योगों को प्रतिस्पर्धा पूँजी, श्रम, सरकारी संरक्षण, अत्यधिक कर भार, परिवहन, विपणन, कच्चे माल की प्राप्ति, शिक्षा का अभाव, संगठन का अभाव आदि समस्याओं से जूझना पड़ रहा है। इन समस्याओं के निदान के लिए सरकार कृत संकल्पित है और विपणन, पूँजी, गुण नियंत्रण, तकनीकी ज्ञान, उद्योगों में समन्वय, निर्यात संवर्द्धन आदि कार्य कर रही है।

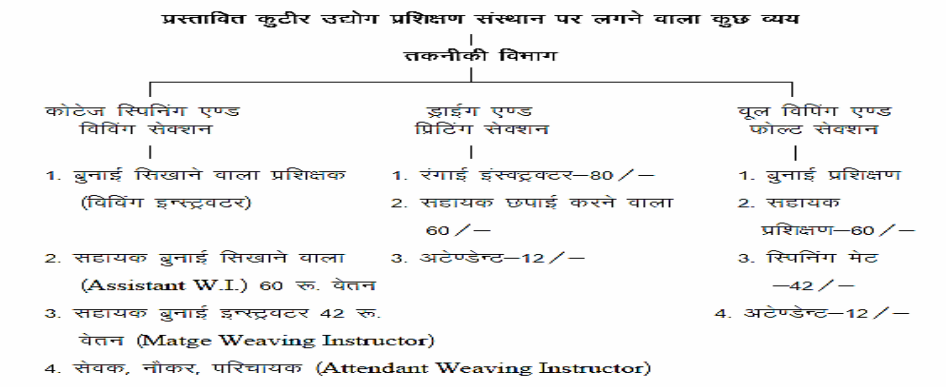

*सहायक आचार्य
भूगोल विभाग
श्री परमहंस स्वामी माधवानन्द महाविद्यालय,
जाड़न, पाली (राज.)

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. मिश्रा वी. सी., राजस्थान का भूगोल, पृष्ठ–12
2. सिंह रामलोचन, भारत में भूगोल का विकास, पृष्ठ–78
3. खुल्लर डी. आर. भारत का भूगोल, पृष्ठ–61
4. भल्ला, एल. आर. राजस्थान भूगोल
5. हुसैन माजिद मानव भूगोल
6. अग्रवाल वासुदेव शरण : दि ग्लोरी फिकेशन ऑफ दि ग्रेड गोडेस
7. बैनर्जिया, पौराणिक एंड तांत्रिक रिलीजीयन, कलकत्ता विश्वविद्यालय 1972, 1966
8. जैम्स टॉड कर्नल, एनल्स एण्ड एंटीक्वीटीज ऑफ राजस्थान, पृष्ठ–87
9. सक्सेना, आशुतोष, राजस्थान का ऐतिहासिक पुरातत्व, साहित्य सागर, जयपुर, 1978, पृष्ठ–6
10. देव, पुष्य सिंह, जयपुर का इतिहास एवं पुरातत्व, राज. हिन्दी ग्रंथ अकादमी, जयपुर, 2014 पृष्ठ–40
11. दूगड़, रामनारायण (अनुवादक) मुँहणोत नैणसी की ख्यात (द्वितीय खण्ड), राजस्थानी ग्रंथागार, जोधपुर (द्वितीय संस्करण) 2010, पृष्ठ–23
12. मेहता, पृथ्वीसिंह, हमारा राजस्थान, हिन्दी भवन, इलाहाबाद, 1650, पृष्ठ–23